Sanskritik aur Samajik Anusandhan
www.shodhjournal.com
ISSN: 2582-5852; Impact Factor: RJIF 5.44
Received: 24-04-2020; Accepted: 15-05-2020; Published: 30-05-2020
Volume 1; Issue 1; 2020; Page No. 46-48

ब्रज की लोक सांस्कारिक यात्रा

Manorama Devi
Post-Doctoral Fellowship, PGDAV College, Delhi University, Delhi, India

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति विश्व की संस्कृतियों से भिन्न अन्यतम संस्कृति है, और भारतीय संस्कृतियों में ब्रज लोक–संस्कृति की अलग पहचान है इसीलिए ब्रज लोक संस्कृति संसार की श्रेष्ठत्म संस्कृति कहलाती है। किसी भी देश की लोक संस्कृति को समझना हो तो सर्वप्रथम उस प्रदेश के सांस्कृतिक मूल्यों को समझना और जानना होगा क्योंकि लोक संस्कृति किसी भी देश, समाज और समुदाय की सम्पन्नता की सूचक होती है। ग्रामीण जीवन के रीति–रिवाज, रहन–सहन, आचार–विचार, धार्मिक आस्था, विश्वास, उत्सव, लोक पर्व, मेला, लोक कलाएँ, लोक गीत, लोक नृत्य, लोक नाट्य, लोक गाथाओं और व्यापार सभी कुछ श्री सम्पदा की ओर आकर्षित करते है। लोक जीवन का पहनावा, उड़ावा, शोक–श्रृंगार, आहार–विहार, भजन–कीर्तन सभी लोक संस्कृति के सशक्त आधार है। लोककर्मः– जन्म से लेकर मरण तक के लोक संस्कार लोक जीवन के प्रत्येक क्षण में उपस्थित रहते है। यही लोक जीवन के विभिन्न तत्व हमारे ब्रज प्रदेश के सांस्कृतिक मूल्य बन जाते हैं।

विश्व में उत्तम संस्कृतियों में ब्रज प्रदेश की संस्कृति का नाम आता है। ब्रज संस्कृति से अभिप्रेत भारत वर्ष का हृदय है। भारत में ब्रज जनपद की संस्कृति महत्वपूर्ण तथा महिमामयी है। इसी कारण ब्रज का स्थान सर्वश्रेष्ठ माना गया है। वर्तमान समय में मथुरा जिले के समीपवर्ती प्रदेश को ब्रज के नाम से जाना जाता है। ब्रज भूमि की चौरासी कोस की परिक्रमा की यात्रा हजारों वर्ष पुरानी है। चौरासी कोस की यात्रा का उल्लेख वेद, पुराण, श्रुति–ग्रन्थ संहिता.....आदि में भी मिलता है। इस परिक्रमा के अंतर्गत 1300 से अधिक गाँव, 1000 सरोवर, 12 वन, 24 उपवन, 16 कदम्बखण्ड, देवी मंदिर.....मंदिर और अनेक पर्वत और यमुना घाट पड़ते हैं। वराह पुराण के अनुसार पृथ्वी पर 66 अरब तीर्थ हैं, और सभी तीर्थ चातुर्मास में ब्रज में आकर निवास करते हैं। इसीलिए हजारों श्रृदालु ब्रज परिक्रमा के लिए आते हैं। ऐसी मान्यता है कि 84 कोस की परिक्रमा लगाने से 84 लाख योनियों से छुटकारा मिल जाता है। परिक्रमा लगाने से कदम–कदम पर जन्म–जन्मातर के पाप दूर हो जाते हैं।1

''ब्रज परिक्रमा के अंतर्गत ब्रज मण्डल के वन–उपवन, कुण्ड, सरोवर, ब्रज के गाँव मंदिर और लीला स्थलों के दर्शन किये जाते हैं, जिसमें 84 कोस के वन–उपवन की परिक्रमा की जाती है परिक्रमा देने वाले को वन–यात्री कहा जाता है। यह परिक्रमा वैशाख कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा से प्रारम्भ होकर सावन की पूरनमासी (रक्षाबंधन) पर समापन हो जाती है। इस यात्रा में 12 वन, 24 उपवन, 16 वटवृक्ष, प्राचीन मंदिर.....आदि आते हैं। इसे वन–यात्रा भी कहते हैं। इसका पूर्ण विस्तार 336 कोस का है। ब्रज वन यात्रा में प्रतिदिन ढाई कोस की परिक्रमा दी जाती है। आजकल परिवहन के साधन इतने उपलब्ध हैं कि कोई समय–सीमा नहीं रही। वन यात्रा एक ही है परिक्रमाएँ अलग–अलग तरह की है।''2

बड़ी परिक्रमा

यह भादों महीने की शुक्ल दसमीं को वृन्दावन से शुरू की जाती है और यह वन यात्रा 15 या 16 दिन में भी पूर्ण हो जाती है। प्रायः इस यात्रा में 40 दिन लगते हैं। इस परिक्रमा के मार्ग में– मधुवन, सतोह–शांतनु कुण्ड, बहुलावन, राधा कुण्ड, कुसुम सरोवर, गोवर्धन, चन्द्र सरोवर, जतीपुरा, डीग, काँमा, कामवन, वरसाना, संकेत, नन्दगाँव, बड़ी–बैठन, कोटवन, कोसी, पैगाम, शेरगढ़, चीरघाट, बच्छवन, सेई, वृन्दावन, लोहवन, निधिवन बलदेव और गोकुल आदि पड़ते हैं।

विशेष परिक्रमा

इस परिक्रमा में ब्रज के सभी लीला स्थलों की परिक्रमा दी जाती है। ब्रजवासी इस परिक्रमा को प्रत्येक माह की एकादशी, पूर्णमासी और पुरूषोत्तम मास के सभी दिनों में भी देते है।

मथुरा की विशेष परिक्रमा वर्ष में पाँच बार दी जाती है।

1. बैशाख पूर्णिमा को वन–विहार के नाम से।
2. आषाढ़ शुक्ल एकादशी को देवसौनी एकादशी के नाम से।
3. आषाढ़ पूरनमासी को व्यास पूनो/मुड़िया पूनों को गोवर्द्धन व राधाकुण्ड की विशेष परिक्रमा दी जाती है।
4. कार्तिक शुक्ल नवमीं को अक्षय नवमीं के नाम से।
5. कार्तिक शुक्ल एकादशी को देवोत्थानी या प्रबोधनी एकादशी के नाम से।

लीला स्थलों की परिक्रमा और प्रसिद्ध दर्शनीय स्थलों की परिक्रमा सुविधा अनुसार कम या अधिक हो सकती हैं।

परिक्रमा का स्थल एवं मार्ग	परिक्रमा की दूरी
1. मथुरा परिक्रमा	पाँच कोस
2. मथुरा परिक्रमा (गरूड गोविंद व वृन्दावन)	नौ कोस
3. गोवर्द्धन–राधाकुण्ड परिक्रमा	सात कोस
4. वृन्दावन परिक्रमा	पाँच कोस
5. नंदगाँव परिक्रमा	दो कोस
6. बरसाना परिक्रमा	दो कोस
7. कामवन परिक्रमा	सात कोस
8. गोकुल परिक्रमा	तीन कोस
9. बलदेव परिक्रमा	ढाई कोस
10. मधुवन परिक्रमा	डेढ कोस
11. लालवन परिक्रमा	पौन कोस
12. कुमुदवन परिक्रमा	आधा कोस
13. बहुलावन परिक्रमा	दो कोस
14. भांडीरवन परिक्रमा	दो कोस
15. लोहवन परिक्रमा	डेढ़ कोस

पंचतीर्थी परिक्रमा

सावन मास की पंचमी से शुरू होगी है। इस यात्रा में पाँच तीर्थों की यात्रा पाँच दिन में पूरी की जाती है। यह एक छोटी सी परिक्रमा है।

राम दल परिक्रमा

यह परिक्रमा कृष्ण दसमीं को वृन्दावन से प्रारम्भ की जाती है। यह परिक्रमा 15–16 दिन में पूरी की जाती है। यह परिक्रमा तेज गति से दी जाती है। ब्रजवासी इस यात्रा को 'लठामार यात्रा' भी कहते हैं। इस परिक्रमा में अधिकतर साधु–संत भाग लेते है।

दंडौती परिक्रमा

यह परिक्रमा विशेष रूप से पुरूषोत्तम मास में दी जाती है। यह परिक्रमा कष्ठ कर होती है। सभी परिक्रमाएँ पैदल और नंगे पाव दी जाती हैं। दड़ौती परिक्रमा को साष्टांग दंडवत लेटकर चलते हुए आगे बढ़कर पूर्ण की जाती है। दंडौती परिक्रमा सबसे अधिक कष्टसाध्य होती है। यदि साष्टांग दण्डवत करने की हिम्मत नहीं है, तो दंडौती परिक्रमाएँ पैदल और नंगे पाव दी जाती हैं।

अंतरगृही परिक्रमा

विश्राम घाट पर संकल्प लेने के बाद दूसरे दिन भादों मास की शुक्ल द्वादशी को प्रातःकाल मथुरा की अंतरगृही परिक्रमा करने की मान्यता है। सर्वप्रथम विश्रामघाट स्थित यमुना जी के दर्शन करके ठाकुर जी, श्री मदन–मोहन जी, श्री दाऊ जी, तुलसी चबूतरा, श्री नाथ जी की बैठक में दूध–भोग की सेवा करते हैं। तत्पश्चात् वराह पद्मनाभ, मथुरा देवी, दीर्घ विष्णु, भूतेश्वर, केशवदेव (श्री कृष्ण जन्मभूमि) मंदिर, गोवर्द्धन नाथ, द्वारिकाधीश मंदिर, नारायण मंदिर तथा अन्य प्रसिद्ध देवी–देवताओं के दर्शन करके परिक्रमा को पूरी करते हैं। परिक्रमा देते समय रास्ते में भजन–कीर्तन करते चलते हैं। जगह–जगह रास–लीला का भी आयोजन होता है।

मथुरा परिक्रमा/पंच तीर्थी परिक्रमा

यह परिक्रमा पाँच कोस की परिक्रमा होती है। इसे पंचकोसी परिक्रमा भी कहते है। यह परिक्रमा प्रत्येक मास की एकादशी, पूर्णिमा या पुरूषोत्तम मास के प्रतिदिन दी जाती है। ब्रजयात्रा समापन करने से पूर्व भी मथुरा की परिक्रमा करते है। इस परिक्रमा को यदि सावन मास की पंचमी से शुरू करते हैं, पाँच दिनों में पूरी करते हैं। यह भी पंचतीर्थी परिक्रमा कहलाती है।

ब्रज यात्रा में बारह वन (पद्म पुराण से)

1. मधुवन
2. तालवन
3. कुमुद वन
4. वहुला वन
5. काम वन
6. खिदिरवन
7. वृन्दावन
8. भद्रवन
9. भांडीरवन
10. बेलवन
11. लोहवन
12. महावन3

ब्रज यात्रा में 24 उपवन

1. अरार (अरिस्टवन)
2. सतोहा (शांतनु)
3. गोवर्धन
4. बरसाना
5. परमदरा
6. नंदगाँव
7. संकेत
8. मानसरोवर
9. शेषशायी
10. बेलवन
11. गोकुल
12. गोपाल पुर
13. परासौली
14. आन्यौर
15. आदि–बदरी
16. विलासगढ़
17. पिसायौ
18. अंजनखौर
19. करहला
20. कोकिलावन
21. दधिवन (दहगाँव)
22. रावल

23. बच्छवन
24. कौरववन।4

ब्रज धाम के प्रसिद्ध 16 वटवृक्ष– 1. सकेंत वट, 2. भाण्डीर वट 3. जाव (जावट) 4. श्रृंगार वट 5. वंशीवट 6. श्रीवट 7. जटाजुट वट 8. काम वट 9. मनोरथ वट 10. आशा वट 11. अशोक वट 12. केलि वट 13. ब्रह्म वट 14. रूद्र वट 15. श्रीधर वट 16. सावित्री वट5

ब्रज धाम के प्रसिद्ध पाँच महादेव– 1. मथुरा में–श्रीभूतेश्वर महादेव 2. काम्य वन में–श्रीकामेश्वर महादेव 3. गोवर्धन में– श्रीचकलेश्वर महादेव 4. वृंदावन में–गोपेश्वर महादेव 5. नंदगाँव में–श्रीनंदीश्वर महादेवजी दर्शनीय है।6

गिरीश कुमार चतुर्वेदी के अनुसार– 12 वन और 24 उपवन के अतिरिक्त अडीग, तालवन, कुमुदवन, बहुलावन, राधाकुण्ड, गुलाल कुण्ड, गांठोली, टोड़ का घना, डीग, कामवन, भानोखर, अँचा गाँव, कमई, करहला, संकेत, प्रेम सरोवर, नंदगाँव, बढ़े वाबू, नन्देश्वर, पिसाया, खादिर वन, उद्धव क्यारी, बठैन, जाव, कोकिलावन, कोटवन, कोसी, चमेली वन, शेषसायी, पैगाम, शेरगढ़, चीर घाट, राम घाट, वच्छव वन, वृन्दावन, मांठ, बलवन, सेई, नरी सैमरी, चौमुंह, जैत, गौकुल आदि स्थान पर जाकर यात्रा मथुरा लौट आती है।'' ब्रज लोक जीवन में इस यात्रा को बहुत महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता है। गाँव और नगर के लोग किसी न किसी रूप में इस ब्रज यात्रा में सम्मिलित होते हैं।7

ब्रज में हरेक पर्व, त्यौहार व उत्सव पर परिक्रमा देने की रिवाज है। इसलिए इन परिक्रमाओं को लोकपर्व भी कहा जाता है। ब्रज की इन परिक्रमाओं में सांस्कृतिक और सामाजिक उदात्त भावनाओं की अनुगूँज होती है। ब्रज की इन परिक्रमाओं से नैसर्गिक चेतना, शक्ति, धार्मिक परिकल्पना, सांस्कृतिक अनुशीलन की मौलिक व मंगलमयी प्रेरणा मिलती है। ब्रज यात्रा में अनेक वन–उपवन, सरोवरों, लीलास्थलों और अनेकों मंदिरों के दर्शन होते हैं।

हर्ष नन्दिनी भाटिया ने अपनी पुस्तक 'ब्रज संस्कृति और साहित्य' में लिखा है–''ब्रजावासी आज भी ब्रज परिक्रमाओं को धार्मिक कृत्य और अनुष्ठान मानकर अति श्रद्धा और भक्ति के साथ करते हैं। ब्रज की परिक्रमाऐं अपना सांस्कृतिक महत्व रखती हैं। उनमें सांस्कृतिक और सामाजिक उदात्त भावनाओं की अनुगूंज होती है। ब्रज–परिक्रमाऐं ग्रामीण पर्यटकों को उत्साहित करतीं हैं इसी कारण ब्रज–परिक्रमाओं का प्रवर्तन और मान्यता आज तक कम नहीं हुई है। इन्हें लोक पर्व कहा जा सकता है। प्रत्येक ऋतु, प्रत्येक माह, प्रत्येक दिन, प्रत्येक पर्व, प्रत्येक त्यौहार व उत्सव पर परिक्रमा देने का ब्रज में विशेष रूप से प्रचलन है। ब्रज परिक्रमाओं से नैसर्गिक चेतना, धार्मिक परिकल्पना व संस्कृति के अनुशीलन–उन्नयन, मौलिक व मंगलगयी प्रेरणा प्राप्त होती है।''8

ब्रज की सांस्कृतिक यात्रा के संबंध में स्वर्गीय विद्वान प्रभु दयाल मित्तल ने लिखा है कि ''ब्रज यात्रा ब्रज लोक–जीवन का सुप्रसिद्ध धार्मिक और सांस्कृतिक आयोजन है। इससे ब्रज के लीला स्थलों के दर्शन, रमणीक वन–उपवनों के दर्शन, प्राकृतिक सुषमा, संपन्नता, लता–कुंजों के निरीक्षण तथा कुंड सरोवरों में स्नान, आचमन का आनन्द प्राप्त होता है। इसके साथ–साथ देवालय और देवमूर्तियों के दर्शन, रासलीला का सुखानुभव और विद्वत्तजनों के प्रवचन का भी लाभ मिलता है। इस यात्रा में प्रति वर्ष हजारों यात्री भाग लेते हैं। भारत के भिन्न–भिन्न भागों से आने वाले यात्रीगण जब एक साथ यात्रा करते हैं, तब देश की पंरपरागत सांस्कृतिक एकता का प्रत्यक्ष प्रमाण मिलता है।''9

सन्दर्भ सूची

1. ब्रज दर्शन, पृ० 02
2. हर्ष नदिंनी भाटिया, ब्रज संस्कृति और साहिय, पृ० 20–21
3. श्री स्वरूप दास, श्रीश्री 64 कोस ब्रजमण्डल, पृ० 66–67
4. गिरीश कुमार चतुर्वेदी– ब्रज की लोक संस्कृति– पृ० 84
5. श्री स्वरूप दास, श्रीश्री 64 कोस ब्रजमण्डल, पृ० 66
6. वही, पृ० 67
7. गिरीश कुमार चतुर्वेदी– ब्रज की लोक संस्कृति– पृ० 84
8. हर्ष नन्दिनी भाटिया, 'ब्रज संस्कृति और साहित्य' पृ० 24
9. गिरीश कुमार चतुर्वेदी– ब्रज की लोक संस्कृति, पृ० 83